रमा एकादशी — चयनित पूर्ण अध्याय का पुनर्कथन

Rama Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Padma Purana 6.60, exact controlling revision 336442. Also compared: Wikisource revision API — complete matching archived content; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — source/adaptation licence; Wisdomlib / N. A. Deshpande — full chapter 60 English comparison only; modern prose not copied.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.60.1–54, Sanskrit Wikisource revision 336442, not a transcription of the original text.

मुचुकुंद का नियम और शोभन का संकट

KATHA 6.60.1–20

युधिष्ठिर कार्तिक कृष्ण पक्ष की एकादशी पूछते हैं। कृष्ण उसे रमा कहते हैं और मुचुकुंद की कथा सुनाते हैं। राजा विष्णु-भक्त और सत्यप्रतिज्ञ थे; इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर और विभीषण से उनकी मैत्री कही गयी है। उनकी पुत्री चंद्रभागा का विवाह चंद्रसेन के पुत्र शोभन से हुआ। शोभन एक बार ससुर के घर आये और उसी समय एकादशी पड़ी। चंद्रभागा चिंतित हुईं: उनके पति दुर्बल थे, भूख नहीं सह सकते थे और पिता का शासन कठोर था।

दशमी को नगाड़े से भोजन निषेध की घोषणा होती थी। शोभन ने पत्नी से सलाह माँगी। चंद्रभागा ने बताया कि वहाँ मनुष्यों के साथ हाथियों, घोड़ों, उनके बच्चों और दूसरे पशुओं का अन्न, घास और पानी भी रोका जाता था; भोजन करने पर निन्दा का डर था। शोभन ने उपवास का निश्चय किया और कहा कि भाग्य में जो है वह होगा। दिन भर भूख से उन्हें कष्ट हुआ। दूसरों के लिए पूजा और जागरण की प्रसन्न रात उनके लिए दुःखद बनी, और सूर्योदय पर उनकी मृत्यु हुई।

राजा ने उनका अन्त्येष्टि-संस्कार कराया। स्रोत स्पष्ट कहता है कि चंद्रभागा ने पति के साथ अपना शरीर नहीं जलाया। किसी विधवा से आत्महानि की अपेक्षा न करें। राजा का कठोर नियम, भूख सहने का दबाव और पशुओं का भोजन-पानी रोकना कथा का प्रसंग है, अपनाने का आदर्श नहीं। भोजन, पानी और उपचार कभी धर्म के नाम पर न रोकें; दुर्बलता को श्रद्धा की कमी न मानें।

Yudhishthira asks about Kartika's dark Ekadashi. Krishna calls it Rama and recounts Muchukunda's story. The king is a devoted, truthful worshipper of Vishnu, described as a friend of Indra, Yama, Varuna, Kubera and Vibhishana. His daughter Chandrabhaga marries Shobhana, Chandrasena's son. When Shobhana visits his father-in-law, Ekadashi arrives. Chandrabhaga worries because her husband is weak and cannot endure hunger, while her father's rule is severe.

A drum announcement on Dashami prohibits eating. Shobhana asks his wife for advice. She explains that humans and even elephants, horses, their young and other animals are denied food, fodder and water, with censure threatened for eating. Shobhana resolves to fast and speaks of accepting destiny. Hunger makes the day painful; a night joyful for worshippers keeping vigil is distressing for him, and he dies at sunrise.

The king arranges his funeral. The source explicitly says Chandrabhaga does not burn herself with her husband. No widow is expected to harm herself. The severe rule, pressure to endure hunger and deprivation of animals are narrative circumstances, not models to follow. Never withhold food, water or treatment in religion's name, or equate physical weakness with insufficient faith.

दिव्य नगर और सोमशर्मा का संदेश

KATHA 6.60.21–39

पति के अन्त्येष्टि-कर्म के बाद चंद्रभागा पिता के घर रहीं। कथा में रमा-व्रत के प्रभाव से शोभन मन्दर पर्वत पर दिव्य नगर में पहुँचते हैं। नगर में सोने के स्तम्भों वाले भवन, रत्न, वैडूर्य और स्फटिक हैं। शोभन सिंहासन पर मुकुट, कुण्डल, हार और बाजूबन्द से शोभित हैं; सफेद छत्र और चँवर हैं, गन्धर्व प्रशंसा करते हैं और अप्सराएँ सेवा करती हैं।

मुचुकुंद के नगर के ब्राह्मण सोमशर्मा तीर्थयात्रा करते हुए वहाँ आते हैं। वे राजा के दामाद को पहचानते हैं। शोभन उठकर प्रणाम करते और ससुर, चंद्रभागा तथा नगर का कुशल पूछते हैं। सोमशर्मा सबकी कुशल बताते और इस अद्भुत नगर का कारण पूछते हैं। शोभन कहते हैं कि रमा एकादशी से नगर मिला, लेकिन वह स्थिर नहीं है। सोमशर्मा उसके अस्थिर होने और स्थिर करने की विधि पूछते हैं। शोभन अपने व्रत को श्रद्धाहीन बताते हुए चाहते हैं कि चंद्रभागा को यह बात बतायी जाये। यह पात्र का अपना कथन है; इसे किसी की मृत्यु या गरीबी का कारण बताने का नियम न बनायें।

सोमशर्मा लौटकर चंद्रभागा को पति और नगर देखने की बात कहते हैं। वे पति से मिलना चाहती हैं और अपने व्रत के पुण्य से नगर स्थिर करने की बात कहती हैं। वे सोमशर्मा से दोनों को मिलाने की सहायता माँगती हैं तथा बिछुड़ों को मिलाना पुण्य कहती हैं। दिव्य नगर धार्मिक कथा है, मृत्यु के बाद मुलाकात का प्रमाण या शोकाकुल व्यक्ति के लिए उपवास की सलाह नहीं।

After her husband's funeral rites Chandrabhaga remains in her father's home. Within the story Rama's observance brings Shobhana to a celestial city on Mount Mandara, with gold-pillared buildings, gems, vaidurya and crystal. He sits crowned and ornamented on a throne, with white parasol and fly-whisks, praised by Gandharvas and attended by Apsaras.

Somasharman, a Brahmin from Muchukunda's city, encounters him while on pilgrimage and recognizes the king's son-in-law. Shobhana rises, bows and asks about his father-in-law, Chandrabhaga and the city. Somasharman reports their well-being and asks how this remarkable city was obtained. Shobhana attributes it to Rama Ekadashi but says it is unstable. Asked why and how to stabilize it, he describes his own observance as without faith and asks that Chandrabhaga be told. This is a character's explanation, not a rule for explaining someone's death or poverty.

Somasharman returns and reports seeing her husband and the city. Chandrabhaga wants to meet him, says her observance's merit can stabilize the city, and asks the traveller to reunite them, praising reunion of the separated. The celestial city is religious narrative, not evidence of meeting after death or fasting advice for grieving people.

पुनर्मिलन और दोनों पक्षों का समापन-वचन

KATHA 6.60.40–54

सोमशर्मा चंद्रभागा को मन्दर के निकट वामदेव के आश्रम ले जाते हैं। ऋषि पूरा वृत्तान्त सुनते हैं और वेद-मन्त्रों से उनका अभिषेक करते हैं। कथा में ऋषि के मन्त्र तथा विष्णु-दिवस के आचरण से उन्हें दिव्य देह और गति मिलती है। वे आनन्दपूर्वक शोभन के पास पहुँचती हैं। पति प्रसन्न होकर उन्हें बायीं ओर बैठाते हैं। चंद्रभागा कहती हैं कि पिता के घर आठ वर्ष की आयु पार करने के बाद से उन्होंने विधि और श्रद्धा से एकादशी की; उस पुण्य से नगर प्रलय तक स्थिर और सम्पन्न होगा। यह बाल्य-व्रत का कथा-स्मरण है, बच्चों को भूखा रखने की उम्र या नियम नहीं।

दोनों दिव्य रूप और आभूषणों सहित मन्दर पर साथ रहते हैं। कृष्ण रमा-व्रत को चिन्तामणि और कामधेनु जैसी कामना-पूर्ति की उपमा देते हैं। फिर केवल पुनर्मिलन पर रुकने के बजाय दोनों पक्षों की एकादशियों का महत्त्व कहते हैं। कृष्ण और शुक्ल पक्ष में फल की दृष्टि से भेद न करने को कहा गया है, जैसे सफेद और काली गाय के दूध में समानता है। पाठ भोग, मुक्ति, पाप से छुटकारे और विष्णुलोक के आश्वासन के साथ समाप्त होता है।

अलग समापन-वाक्य उत्तरखण्ड के अध्याय 60, कार्तिक कृष्ण रमा एकादशी और उमापति–नारद संवाद को नाम देता है। अभिषेक का कोई अलग मन्त्र, दीक्षा-विधि, मृत्यु के बाद पुनर्मिलन की गारंटी या स्वास्थ्य-विरोधी नियम इस पुनर्कथन में नहीं दिया गया है। यही पूरे 54-पद चयनित अध्याय का अन्त है।

Somasharman takes Chandrabhaga to Vamadeva's hermitage near Mandara. The sage hears their account and performs an ablution with Vedic formulas. In the story his formulas and her Vishnu-day observance give her a divine body and state. She joyfully reaches Shobhana, who seats her on his left. She recalls observing Ekadashi with faith and the prescribed manner after passing the age of eight in her father's home, and says its merit will sustain the city until dissolution. This childhood recollection is not an age or rule for depriving children of food.

They dwell together on Mandara in divine forms and ornaments. Krishna compares Rama's observance with Chintamani and Kamadhenu as wish-fulfilling images. The chapter does not stop at reunion: it closes by discussing Ekadashis of both fortnights. Dark and bright are said to yield equal religious fruit, compared with the similar milk of white and black cows. Enjoyment, liberation, release from sin and Vishnu's world are its concluding assurances.

The separate colophon names Uttara chapter 60, Kartika's dark Rama Ekadashi and the Umapati–Narada dialogue. This retelling supplies no extracted initiation or ablution formula, guarantee of reunion after death or health-compromising rule. It ends the entire selected 54-position chapter.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Rama Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.60.1–54, revision 336442, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to the retelling and its language layers, not unrelated site content or code. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.